गाँव चली फायदे मंच शौचालय की ओर

जिस प्रकार सूर्य की रोशनी सूखा या गीला जगहों पर पड़ने से चमकने लगती है। ठीक उसी प्रकार आज हम गर्व के साथ यह महसूस करने लगे कि हमारा यह समाज भी चमकता सा दिखने लगा।

आज की परिस्थिति एक बदलाव की दिशा में कदम रख रही है। दहमा खैरी, खूटहा, पंचायत का उदन घ ारारी गाँव ने समाज को एक नयी दिशा दी।

सोच कैसे बनी ?

प्रेरणा स्वरूप श्री सिंघेश्वर चौधरी उम्र– 125 वर्ष ग्राम, उदन घरारी, महिला शौच के चलते उठी विवाद में ग्रामीण पंचायत में उपस्थित पुरूष एवं महिलाओं के बीच एक समझौता के तहत महिलाओं को शौच में कोई परेशानी न हो और यत्र–तत्र दूसरे खेत में महिला पाखाना नहीं करे जिसके चलते बार–बार आपस में झगड़ा न हो, क्यों नहीं मेघ पाईन वालों का बात मानकर फायदेमंद शौचालय का निर्माण कर लें ताकि झगड़ा भी समाप्त हो जायगा बल्कि साथ ही मुफ्त में खाद भी तैयार हो जायगा। इसी सोच के साथ पंचों के बीच फायदेमंद शौचालय बनाने का निर्णय श्री सुबेदार चौधरी के सुझाव पर लिया गया। इस निर्णय से महिलाएँ के बीच खुशी का लहर दौड़ गयी। सारी महिलाएँ खुशी से आपस में कई झुण्ड (समूह) में बातचीत करने लगी। खुशी भी क्यों न हो आखिर पैखना करने के लिए घंटों पुरूष के हटने की प्रतिक्षा करना सहज तो नहीं है। इस तरह का त्याग तो सिर्फ महिला वर्ग ही करते रहे हैं। जिसका परिणाम हुआ कि श्री मति सुलेखा देवी पंच के निर्णय का स्वागत करते हुए इस कार्य में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने का फैसला किया गया।

मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ता एवं ग्रामीणों के सहयोग से सितम्बर 2009 में श्री सुबेदार चौधरी के दरवाजे पर फायदेमंद शौचालय बनकर तैयार हुआ। हालांकि इन्हें व्यवहार में लाने के लिए काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

- पैखाना छूने के प्रति घृणा,
- कौन आदमी कन्टर को हटावे,
- कौन मिट्टी में डालेगा।

इस तरह के समस्या सामने आए। किन्तु श्री मति सुलेखा देवी के क्रान्तिकारी बिचारों ने समाज को यह बता दिया कि फायदेमंद शौचालय का व्यवहार हम कैसे करेंगे और इससे बने खाद का उपयोग कैसे करेंगे ?

उदाहरण स्वरूप फायदेमंद शौचालय द्वारा तैयार किया खाद का प्रयोग नेनुआ की पैदावार ने लोगों के आँखें पर से परदा हटा दिया जब गॉव में नेनुआ की खेती करने बाले किसान में चर्चा होने लगा कि

फायदेमंद शौचालय का नेनुआ है। चुँकि इसकी लम्बाई सामान्य से काफी लम्बा, वजन में ज्यादा आकर्षक था। सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह थी कि ठीक उसी के बगल में नेनुआ की खेती में रसायनिक खाद का प्रयोग किया। जिसमें कुछ पौधे सुख गए, शेष जो बचा उसमें छोटा साईज का नेनुआ था और संख्या भी कम।

<u>परिणाम :</u>

- कुल मिलाकर समाज शौचालय को तैयार हुए।
- लोग अपनी संसाधन से भी बनाने की बात करते हैं।
- 2700 रू0 का नेनुआ बाजार में बिका।
- मेघ पाईन अभियान खगड़िया के अथक प्रयास ने रंग लाना शुरू किया